ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन की सम–सामयिक युग में प्रासंगिकता

किरण सैन, शोधकर्त्री, श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर ई–मेलः Sainkiran46@gmail.com
मन्जू देवी, सहायक आचार्या, श्री बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जयपुर ई–मेलः thorimanju82@gmail.com
डॉ. मनोज कुमार, सहायक आचार्य, श्री बालाजी पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर ई–मेल : kumarmanoj381f@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में 'डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन की सम–सामयिक युग में प्रासंगिकता' का वर्णन किया गया है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का शिक्षा दर्शन छात्रों में 'नया जोश तथा उत्साह' की भावना पैदा करने, शिक्षा को जीवन की समस्याओं से जोड़ने और छात्रों को सशक्त बनाने पर केंद्रित था ताकि वे समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकें। उनका मानना था कि शिक्षा, रोजगार के अवसरों के साथ–साथ छात्रों को सशक्त बनाने का एक साधन होना चाहिए। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा, नैतिकता और छात्र सशक्तिकरण के माध्यम से शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया।

2 प्रस्तावना :

भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम हमारे देश के प्रख्यात वैज्ञानिक हैं जो भारत गणराज्य के राष्ट्रपति रह चुके हैं। उनका पूरा नाम है अवुल पकीर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम। वे भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति रहे हैं। वे एक गैर राजनीतिक व्यक्ति रहे हैं फिर भी विज्ञान की दुनिया में चमत्कारिक प्रदर्शन के कारण इतने लोकप्रिय रहे कि देश ने उन्हें सिर माथे पर उठा लिया तथा सर्वोच्च पद पर आसीन कर दिया। एक वैज्ञानिक का राष्ट्रपति पद पर पहुंचना पूरे विज्ञान जगत के लिए सम्मान तथा प्रतिष्ठा की बात थी। डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में हुआ था। इनके पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी, और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। इनकी माँ, आशियम्मा उनके जीवन की आदर्श थीं।

3 मुख्य तकनीकी शब्दावली :

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, शिक्षा दर्शन, सम–सामयिक युग, प्रासंगिकता।

4 डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा दर्शन :

डॉ० कलाम भारत के ''मिसाइल मैन ऑफ इण्डिया'' तथा ''भूतपूर्व राष्ट्रपति'' के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने अग्रणी देशों की पंक्ति में भारत को ला खड़ा किया। डॉ० कलाम जी ने अनेक पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन तथा सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की जो समाज को नित नई दिशा देने में प्रेरक सिद्ध हो रही है। कलाम का शैक्षिक दृष्टिकोण तार्किक, कौशल व वैज्ञानिक दर्शन पर आधारित है। ''मिसाइल मैन' के नाम से विख्यात वैज्ञानिक राष्ट्रपति भारतीय समाज की सम्पन्नता को समाज, राजनीति, शिक्षा, उद्योग इत्यादि में क्रान्तिकारी प्रगति के आधार पर परिवर्तन देखते है।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा का अर्थ :**

शिक्षा के लिए केवल शिक्षक और शिक्षार्थी ही नहीं वरन् पाठ्यक्रम की भी आवश्यकता होती है। उनके अनुसार इन तीनों के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया को ही शिक्षा कहते है।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य :**

- छात्रों की अंतर्निहित सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
- विभिन्न क्षमताओं का विकास एवं एकीकरण
- आध्यात्मिक आधार पर वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास
- अदम्य साहस का विकास
- बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता का विकास

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम :**

डॉ. कलाम ने अपने शैक्षिक दर्शन में पाठ्यक्रम पर भी जोर दिया है। उन्होंने रोजगारोन्मुखी शिक्षा को पाठ्यक्रम में अधिक स्थान दिया है। कलाम के अनुसार शैक्षणिक संस्थानों को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षण विधियाँ :**

डॉ. कलाम ने बालक के विभिन्न स्तरों के अनुरूप शिक्षण की विधियाँ बताई है जिनका वर्णन इस प्रकार

है –

- **प्राथमिक स्तर पर शिक्षण विधियाँ :–** डॉ. कलाम ने प्राथमिक स्तर पर प्रश्नोत्तर विधि, अनुकरण विधि, करके सीखना विधि का सुझाव दिया।
- **माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षण विधियाँ :–** डॉ कलाम ने इस स्तर पर समस्या विधि, निर्देशन और परामर्श विधि, प्रयोग विधि, समूह कार्य विधि, करके सीखना, स्व अवलोकन विधि का सुझाव दिया।
- **उच्च स्तर (विश्वविद्यालय स्तर) पर शिक्षण विधियाँ :–** डॉ. कलाम ने यहाँ पर समस्या समाधान विधि, प्रयोग विधि, समूह कार्य विधि, अन्वेषण विधि के प्रयोग पर बल दिया।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षक :**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार, एक शिक्षक सिर्फ ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि छात्रों के जीवन को आकार देने वाला, एक मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत होता है। शिक्षक, छात्रों के चरित्र, क्षमता और भविष्य को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार छात्र :**

राष्ट्र के एक जिम्मेदार विद्यार्थी होने की भूमिका समझाते हुए कलाम कहते थे कि छात्रों को माता–पिता, अध्यापकगण और मार्गदर्शकों का आदर करना, ये तीनों बातें सफलता की नींव रखती हैं। यदि आप इनका सम्मान नहीं करते तो जीवन में कुछ नहीं कर पायेंगे।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षक–छात्र संबंध :**

जब शिक्षा की प्रक्रिया आंतरिक आजादी के साथ गुंथी हुई होती है तो विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही शिक्षा ग्रहण करने वाले हो जाते है और बराबरी पर आ जाते है। प्रेम और सदाचार की भावना खिल रही होती है शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच एक नया रिश्ता बनाता है।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार अनुशासन :**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार, अनुशासन का अर्थ है, "नियमित और सही व्यवहार"। उनका मानना था कि आत्म–अनुशासन, सफलता के लिए सबसे बड़ा निवेश है और जीवन के हर कार्य में अनुशासन महत्वपूर्ण है।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार विद्यालय :**

डॉ. कलाम विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली मूल्य आधारित शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि एक व्यक्ति में समाचार, विवेक, सहयोग, सहिष्णुता, सद्भाव, वचनबद्धता आदि सभी गुणों का समावेश होना चाहिए। तथा इसे विद्यालय द्वारा सभी व्यक्तियों को प्रदत्त किया जाना चाहिए।

❖ **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन की सम–सामयिक युग में प्रासंगिकता :**

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा दर्शन शिक्षा को किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखता बल्कि बालकों की शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, चारित्रिक अर्थात सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान देने की कोशिश करता है।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ऐसी शिक्षा को जो देशहित में उपयोगी न हो उसे व्यर्थ माना।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा दर्शन समसामयिक युग में बहुत प्रासंगिक है क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि छात्रों को सशक्त बनाकर एक बेहतर समाज का निर्माण करना है।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने हमेशा ज्ञान और नैतिकता के महत्व पर जोर दिया।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का मानना था कि शिक्षा सामाजिक सुधार का एक शक्तिशाली उपकरण है।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के ये विचार आज भी प्रासंगिक है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में ऐसे तत्व होने चाहिए, जिससे हमारे नौजवानों के हृदय और मन में जाति, धर्म, वर्ण, लिंग और रंग के आधार पर कोई भी विभेद शेष न रहे।

निष्कर्ष :

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की शिक्षा दर्शन का निष्कर्ष यह है कि शिक्षा एक सशक्त माध्यम है जो व्यक्तिगत विकास और सामाजिक उत्थान दोनों के लिए आवश्यक है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल

डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक बेहतर समाज का निर्माण करना है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. www.wikipedia.com
2. डॉ. एन. पी. सिंह, 'शिक्षा के दार्शनिक आधार'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या 2–3
3. www.homescienceiournal.com
4. डॉ. तिवारी अरूण ''भारत 2020'' राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, संस्करण 2019, पृष्ठ संख्या 21
5. डॉ. कलाम ए.पी.जे. अब्दुल ''हम होगे कामयाब'' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या 32–54
6. डॉ. कुमार प्रशान्त ''शिक्षा कलाम की कलम से'' संज्ञान प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2020, पृष्ठ संख्या 60–65
7. डॉ. कलाम ''जीवन वृक्ष'' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या 38–47
8. www.google.com